सिनेमा और हिंदी

डॉ. अफसर उन्निसाँ बेगम, (एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग, मुमताज डिग्री एण्ड पी.जी कॉलेज, मलकपेट, हैदराबाद तेलंगाना
मो. : 8179704078, 837420833
ईमेल : bafsarunnisa@gmail.com

हिंदी सिनेमा आज भारत एवं विश्व भर में पहली पसंद बना हुआ है। यह साहित्य की उन विधाओं में से है जो भाषा सिखाने के साथ-साथ दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करता है। सिनेमा समाज के प्रत्येक वर्ग का सुगमता और सजगता से दृश्य अंकन करता है। मानव जीवन समस्याओं से भरा है। सिनेमा देखकर मनुष्य कुछ देर के लिए अपने जीवन के दुःख, संघर्ष और निराशा को भूलकर आनंद प्राप्त करता है। मनोरंजन और ज्ञानार्जन के माध्यमों में सिनेमा एक सशक्त माध्यम के रूप में उन्नत है। सिनेमा का विषय क्षेत्र अत्यंत ही व्यापक है। धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, खेलकूद, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान, संगीत, साहित्य, कला, तकनीकी आदि समस्त विषयों पर उत्तम से सर्वोत्तम फिल्में भारत में बनती है। हिंदी सिनेमा का आरंभ सन् १८९९ ई.वीं में श्री भटवडेकर ने लघु फिल्में बनाकर किया। इसके बाद दादा साहब फाल्के ने प्रथम लंबी मूक पौराणिक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' सन् १९१३ में बनाकर हिंदी फिल्मों के जनक बने। सत्य और न्याय के संदेश पर आधारित यह फिल्म ध्वनिरहित होकर भी लोगों में लोकप्रिय साबित हुई। सन् १९३१ में अर्देशिर ईरानी ने पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनाई, जो हिंदी भाषा के विकास की कामयाब फिल्म साबित हुई। इसके बाद फिल्म निर्माता निर्देशकों ने असंख्य फिल्मों का निर्माण किया। आज सिनेमा ने एक वृहद उद्योग का रूप धारण कर लिया है। भारत में उत्तम से सर्वोत्तम फिल्में तेज रफ्तार से बन रहीं हैं। आवश्यकतानुसार उसकी शूटिंग विदेशों में भी होती है। यह 100 करोड़ से अधिक उद्योग करने के स्तर तक पहुँच चुकी है।

अनेक प्रांतीय भाषाओं और राष्ट्रीय भाषा हिंदी में फिल्में बनती ही रहती हैं। अब तो दूरदर्शन पर फिल्में और धारावाहिक लगातार दिखाए जाते हैं। बंगाली, गुजराती, मलयाली, कन्नड़, मराठी, भोजपुरी, तमिल, तेलुगू, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में तो फिल्में बनती हैं सबसे अधिक फिल्में भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी में बनाई जाती हैं हिंदी फिल्में देश-विदेश में बड़ी पसंद से देखी जाती है। इन फिल्मों गीत सबकी जुबान पर होते हैं। हिंदी विश्व की दूसरे नंबर पर सर्व क बोली जाने वाली भाषा है यह अपनी लिपि और ध्वन्यात्मक (उच्चारण) के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञानसम्मत है। अनेक देशों विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग स्थापित हुए हैं और पाठ्यक्रम में हिंदी रखा गया है। "विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट पर अंकित विवर के अनुसार आज की तारीख में लगभग 22 मिलियन ऐसे भारतवं विश्व के 132 देशों में अपनी जड़ें जमा चुके हैं जिनके लिए हिंदी उ की सभ्यता, संस्कृति, पहचान और अस्मिता है। आज विश्व के तकरीब 160 विश्वविद्यालयों में हिंदी की विधिवत शिक्षा के साथ शोध कार्य हो रहे हैं।"[1] हिंदी भारत के अलावा बाहरी देशों जैसे पाकिस्तान, नेपा भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, मालद्वीप, इंडोनेशिया, मलेशिय थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाड यूरोप के देशों, संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), अफ़गानिस्तान, मिश्र उज्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान आदि से अधिक देशों त फैली हुई है। उक्त देशों में हिंदी का प्रयोग बोलने, लिखने, पढ़ने त अध्ययन और अध्यापन के कार्य पूरी रोचकता और उत्साह के स किए जा रहे हैं।

साहित्यिक पुस्तकें केवल पढ़े-लिखे मनुष्य तक सीमित रहती उनका आनंद और ज्ञान एक विशिष्ट वर्ग तक ही पहुँचता है लेकि सिनेमा के माध्यम से जो बात कही जाए वह सुदूर तक और सभी व तक पहुँचती है अनपढ़ भी उसे देखकर आनंद और ज्ञान प्राप्त क सकते हैं। यही कारण है कि बड़े-बड़े विद्वान लेखकों की पुस्तकों

RNI NO-DELHIN 28802/2017 वर्ष :5 अंक :1 जनवरी 2018
भाषा सहोदरी - हिन्दी

Scanned with CamScanner

बालशौरि रेड्डी : समग्र चिंतन

संपादक : डॉ. सी. कामेश्वरी, डॉ. संध्या दास

प्रकाशक
मिलिन्द प्रकाशन
4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग
हनुमान व्यायाम शाला की गली
सुल्तान बाज़ार
हैदराबाद - 500 095
(फोन : 040-24753737)

आवरण एवं साज सज्जा
वी'डिजाइन, हैदराबाद
मो.: 098855 08088

प्रथम संस्करण
2018

मूल्य
₹ 400/-
रुपये चार सौ पचास

ISBN : 978-81-7276-578-1

BALSHOUWRI REDDY : SAMAGRH CHINTAN
EDITOR : Dr. C. KAMESHWARI, Dr. SANDHYA D

उपाध्यक्ष का संदेश

कुलपति के.एम.मुँशी जी के कर कमलों से स्थापित भारतीय विद्या भवन भारतीय संस्कृति को उजागर करते हुए आज ध्रुव तारे की भाँति अपना अटल स्थान प्राप्त कर चुका है। भवन्स विवेकांद महाविद्यालय, सैनिकपुरी, सिकंदराबाद की स्थापना सन् 1993 में हुई थी। कर्मठशील प्राध्यापकों के सहयोग से आज इसने स्वायत्तता प्राप्त कर ली है। महाविद्यालय के सभी विभाग अपने अनोखेपन के कारण अद्वितीय स्थान रखते हैं। भाषा विभाग नित्य-नूतन कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए महाविद्यालय में अपना अनुपम स्थान रखता है।

गत वर्ष मार्च के महीने में 'बाल शौरि रेड्डी - समग्र चिंतन' विषय पर हिन्दी में द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। संगोष्ठी की स्मारिका आज पाठकों को समर्पित की जा रही है। भाषा विभाग और संगोष्ठी के संयोजकों को मैं बधाई देना चाहता हूँ और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

एयर कोमोडोर
जे.एल.एन. शास्त्री

Scanned with CamScanner

प्रेरणा का स्रोत - समाज

- डॉ. अफसर उन्नीसा बेगम

बालशौरि रेड्डी जी साहित्य सृजन-प्रक्रिया का प्रेरणा स्रोत समाज है। उन्हीं के शब्दों में - ''साहित्य सृजन की प्रेरणा मुझे समाज से प्राप्त होती है। नित्य प्रति समाज में होने वाली घटनाओं, समाचार-पत्रों, कार्टूनों, मित्रों व परिस्थितियों की आपबीती घटनाओं तथा चित्रों द्वारा प्रेरणा मिलती है। ग्रंथों तथा पत्रिकाओं के अध्ययन करते समय उनसे संबंधित समानांतर भावनाएँ जो कि मेरे अनुभव में सुनने या देखने में आई होती है - मेरी संवेदनशीलता द्वारा पुष्ट हो अभिव्यक्त होने को लहलहाती है।''

(तेनालीराम के लतीफे भाग-1, ज्ञान भारती, बाल पाकेट बुक्स विश्वेश्वरनाथ रोड, लखनऊ 1970)

बालशौरि रेड्डी जी की कहानियाँ - सामाजिक मूल्यांकन

बालशौरि रेड्डी जी तेलुगु भाषी प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न हैं। उपन्यास, कहानी, समीक्षा, एकांकी, पत्रिका संपादन, अनुवाद आदि सभी की रचना इन्होंने की है। दक्षिण में राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध व लोकप्रिय बनाने में रेड्डी जी का योगदान अद्वितीय है। रेड्डी जी ने आँध्र के जन-जीवन, आचार-विचार, रहन-सहन, कला-कौशल, संस्कृति-सभ्यता एवं परिवेश को हिन्दी पाठकों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। रेड्डी जी की कहानियाँ समय-समय पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है और आकाशवाणी के अनेक केंद्रों से प्रसारित होती रही है।

बालशौरि रेड्डी कथा रचनावली भाग -4 में इनकी 25 कहानियाँ उपलब्ध हैं। इनकी कहानियों में दक्षिण के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक। राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का सहज चित्रण मिलता है। इनकी समस्त कहानियों में केवल गरीबी, घर-गृहस्थी की समस्या, बेईमानी की समस्या, रिश्वतखोरी की समस्या, दहेज की समस्या, चरित्रहीनता की समस्या, जनसंख्या की समस्या हड़ताल की समस्या, रोज़गार की समस्या, निरक्षरता की समस्या, बंधुआ मजदूरी की समस्या, चोरी की समस्या, भूख की समस्या आदि अनगिनत विषयों को उठाया ही नहीं है। प्रतियुत उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है या हमें उसका समाधान ढूँढने पर बाध्य किया है।

रेड्डी जी की बहुचर्चित कहानियों में अपना-अपना राग, न्यायतुला, ज्ञानोदय, अतृप्त कामना, दिल का काँटा, घर और गृहस्थी, पापी चिरायु, बैसाखी, जब आँखें खुली, प्रकाश की ओर, भूख-हड़ताल और चाँदी का जूता प्रमुख हैं -

1. अपना-अपना राग - कहानी की प्रमुख पात्र मिसेज सरोजा है, जिसका पशु-प्रेम उस

पशुता तक उतर आया है, जहाँ परिवार, सामाजिक नाते-रिश्ते तथा नैसर्गिक स्वभाव को भूल कर वह आत्मप्रवंचना में जीने लगती है। उनके पति राजनारायण कर्मठ पुलिस अधिकारी थे। उनका व्यक्तित्व रोबदार प्रभावपूर्ण था परन्तु सेवानिवृत्ति के पश्चात् उनकी स्थिति दयनीय हो जाती है उन्हें रक्तचाप, लकवा व अन्य बीमारियों ने आ घेरा था स्थिति मरणासन्न तक पहुँच चुकी थी अचानक तबीयत बहुत बिगड़ गई। डॉक्टर की तत्काल आवश्यकता थी पुत्री कमलू यह बात अपनी माँ से कहती भी है पर सरोजा बेटी की बात को नज़रअंदाज करके अपने पोमरिन जाति के बीमार पिल्ले को उसी समय डॉक्टर के पास ले जाती है पर पति को नहीं। कमलू कहती भी है - ''मम्मी, क्या तुम्हें पिताजी से बढ़कर पिल्ला ज्यादा प्यारा है।''

(बालशौरि रेड्डी कथा रचनावाली भाग-4, पृष्ठ संख्या 384)

राजनारायण परलोक सिधारते है उधर सरोजा घर लौटती है और कुत्ते का पिल्ला मर जाता है। दुःखी मन से इसकी सूचना कमलू को देती है। कमलू रोते हुए सिसकिया लेती है, क्योंकि घर में राजनारायण का शव पड़ा है। सरोजा जब यह देखती है तो काँप उठती है वह दिल से अपने पति को प्रेम करती थी, पर उसके मन-मस्तिष्क पर अभिजात्य का अहंकार छाया था। सरोजा की आँखें खुलने तक उसकी दुनिया ही बदल चुकी थी।

इस तरह 'अपना-अपना राग' कहानी पाठक के मन को उद्वेलित करती है उसे झूठे अभिजात्य के आडंबर से घृणा और रिश्तों के प्रति कर्त्तव्य-परायणता का बोध कराती है। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आज के पुरुष का जो तिरस्कार हमारे परिवारों में हो रहा है उसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में सजीव हो उठा है।

2.न्याय तुला - इस कहानी का कथानक विस्तृत है। इसमें संविधान स्वीकृत अंध न्याय परंपरा से अलग उन्मीलित नेत्र परंपरा का संवेदनशील न्याय चित्रण है। इसका आरंभ वर्तमान न्याय विधान से आरंभ होता है और समापन प्राचीन न्याय सिद्धांत पर होता है।

किशनदास के मरते ही उनके पुत्रों ने संपत्ति आपस में बाँट ली। द्वितीय पुत्र अश्वत्थ नारायण दुष्ट, व्यभिचारी था। गाँववाले उससे डरते और घृणा करते थे। उसकी पत्नी सुलोचना गुणवंती स्त्री थी। चार संताने भी थी पर अश्वत्थनारायण का व्यवहार अपनी संतान के प्रति भी बुरा था पत्नी के निर्दोष होने पर भी उसे कठोरदंड व यातनाएँ देता था। वह राक्षस बन चुका था। गाँव की जिस बहू-बेटी को चाहा बलपूर्वक हासिल कर लेता था। यहाँ तक कि उसने सुलोचना की भाभी से भी जबरदस्ती की। एक दिन पति के दुष्ट व्यवहार से त्रस्त होकर सुलोचना काँपते हाथों से सोते पति की हत्या कर देती है। हत्या करते उसे किसी ने भी नहीं देखा था। पुलिस संदेह पर उसे पकड़ती है। उस पर मुकद्दमा चलता है कोई भी गाँववाला उसके खिलाफ गवाही नहीं देता।

सुलोचना न्यायाधीश से अपना गुनाह कबूल करते हुए कहती है, ''मुझे उधार माँग लाने के लिए कहते, मैं इन्कार करती तो कोडे से मारते, लात मारते मेरा जूडा पकड़कर दीवार से टकरा देते, कभी मेरी जाँघ पर ब्लेड से चीरकर उस पर चूड़ियों का चूर्ण लगाकर पट्टी बाँध देते, मेरे

Scanned with CamScanner

ISSN No. 2348-6163

साहित्य-सेतु

जनवरी-मार्च, 2018

प्रकाशक
आंध्र प्रदेश हिंदी अकादमी
हैदराबाद

Scanned with CamScanner

विषय-क्रम

पृ.सं.

5 संपादकीय

आलेख

8 भारतीय शिक्षा प्रणाली में हिन्दी और अन्य भाषाओं की भूमिका
- डॉ.एम.वेंकटेश्वर

17 रवीन्द्र संगीत का व्यावहारिक पक्ष- रिंकी सिंह

20 तुलसीदास के राजनीतिक विचार - भूपेन्द्र सिंह

30 विश्व शांति और हिन्दी - डॉ. डी.विद्याधर

33 भुवनमोहिनी की आधिकारिक माँग का दस्तावेज : 'अगनपाखी'
- डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र

41 नई कहानी विधा का विकास व उसके नामकरण पर उभरे विवाद
- डॉ. टी.कविता

46 साहित्य और विचारधारा - आशुतोष कुमार पाण्डेय

53 आनेवाली नस्लें हम पर भी .... - सुभाष कुमार

59 हिन्दी सिनेमा और स्त्री अस्मिता - गीता कुमारी

61 साहित्येतिहास में रीतिकाल की रूढ़ियाँ : समीक्षात्मक अध्ययन
- अनिल कुमार गुप्ता

66 कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित पर्यावरण चेतना : एक अध्ययन
- डॉ. मनोज कुमार

70 राजकमल चौधरी के काव्य की शिल्पगत भंगिमा - सुजीत कुमार वत्स

76 हिन्दी में राजकमल चौधरी - डॉ. डी.जयप्रदा

80 महाकवि कालिदास की जीवनी - डॉ.कविराजू

87 त्योहार के बदलते रूप - डॉ.जे.सरिता

Scanned with CamScanner

त्योहार के बदलते रूप

- डॉ.जे.सरिता

भारतवर्ष एक ऐसा देश है, जहाँ कई धर्म और संप्रदाय है, समाज चार वर्णो में विभजित है, प्रत्येक वर्ण का अपना अपना त्योहार होता है। भारतीय समाज में इन त्योहारों का बड़ा महत्व है। प्रायः सभी वर्ण के लोग सभी त्योहारों में भाग लेते है, परंतु हर त्योहार संबंधित वर्ण विशेष के लिए अधिक महत्व का होता है। हिन्दू धर्म की यह उदारता है किसी भी संस्कृति और धार्मिक पर्व में सभी हिन्दू प्रेमपूर्वक सम्मिलित होते हैं।

समय के साथ-साथ त्योहार मनाने के तौर तरीके भी बदलते गए, जो परिवार, धर्म के प्रति कट्टर रहा, वो अब तक त्योहार के महत्व को समझ, उसकी गरिमा को बचा रहा है, परंतु जो मनुष्य मात्र दिखावे के लिए, अपने नाम के लिए उत्सव मना रहा है; उसने तो त्योहार का रूप ही बदल दिया। हमारे चार प्रमुख त्योहार है, उनमे पहला त्योहार रक्षा बंधन है, जो एक पवित्र और महान त्यौहार माना जाता है। यह त्योहार भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक है। भारत का हिन्दू समाज ही विश्व का ऐसा समाज है जिसमें भाई बहिन के संबंध इतने पवित्र और अटूट है। इस दिन बहिन भाई की कलाई पर पवित्र धागा रुपी राखी बाँधकर भाई के चिरायु और उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है। बदले में भाई अपनी बहन को यथाशक्ति भेंट देता है।

समय बदलते आज भाई की कलाई पर बंधी जा रही, राखी की कीमत बढ़ती जा रही है, पवित्र राखी भी बाजार में बिक रही है। अर्थात् ऐसी राखियाँ खरीदने वाली बहनें भी है, जो अपने भाई से महँगे भेंट की आशा रखती है। इसका अर्थ यह भी तो हो सकता है कि जितनी महँगी राखी उतनी महँगी भेंट। आम तौर पर सगे भाई को बहन राखी बाँधती है, परंतु आज कई मुँह बोले भाई और मुँहबोली बहने है, जो राखी के नाम पर रक्षा बंधन की पवित्रता का महत्व कम कर रही है। इससे कई भाई बहन के पवित्र रिश्ते की बदनाम हो रहे हैं। दूसरा महत्वपूर्ण त्योहार है नवरात्रि या दशहरा यह अश्विन शुक्ल 10 को विजया(दशहरा) का त्योहार मनाया जाता है। प्राचीनकाल में दुर्गा के उपासक क्षत्रिय लोग वर्षा बीतने पर अपने कार्य का स्मरण करते है। दुर्गा की नवरात्रि भर उपासना करने के तथा नवरात्रि की अंतिम नवमी को दुर्गा-पूजन करते थे। राम-लीला के माध्यम से आदर्श राम-राज्य की झाँकी प्रस्तुत की जाती थी। यह त्योहार हिन्दुओं के हृदय में वीरता, दया, सहानुभूति, आदर्श, मैत्री-भावना आदि उच्च गुणों की प्रेरण देता है।

समय और वातावरण के कारण आज इसके रूप में भी परिवर्तन अवश्य हो गया है। नवरात्रि के नौ दिनों, जहाँ दुर्गा माँ की मूर्ति की स्थापना कर भक्ति भाव से गरबा और डांडिया खेला जाता है। और माँ भक्त को प्रसन्न होकर आर्शीवाद देती है। वातावरण एवं परिसर भी पवित्र रहता है, और न आज न तो परिसर पवित्र रखा जाता है, अपवित्रता के कारण माँ का आर्शीवाद

Scanned with CamScanner

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोध पत्र प्रकाशन हेतु अधिकृत राष्ट्रीय शोध पत्रिका
(यू.जी.सी. क्रमांक 144, जर्नल नं. 48209) ISSN 2277 - 9264
हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

संकल्य

46 वर्षों से
निरंतर प्रकाशित

जनवरी-मार्च, 2018

बदरीविशाल पित्ती जी

Scanned with CamScanner

72 डॉ.नवीन नन्दवाना/भीष्म साहनी के नाटकों में मानवीय संवेदना और संघर्ष की अभिव्यक्ति
81 डॉ.अमरसिंह वधान/श्री अरविंद का काव्य चिंतन
84 डॉ.विजय हिंदुराव पाटील/हिंदी उपन्यासों में बाजारवाद का चित्रण
87 डॉ.करन सिंह ऊटवाल/आसफ जाही काल में नाटक और रंगमंच का महत्व
90 डॉ.डाली/'चिंता' की प्रतीकात्मकता व भाषिक सौंदर्य
94 डॉ.तबस्सुम बेगम/हाशिए के समाज में स्त्री का आत्मसंघर्ष
97 डॉ.रमा पद्मजा वेदुला/नारी मुक्ति आंदोलन के विविध आयाम
102 डॉ.माहे तिलत सिद्दीकी/ऐसो को उदार जगमाही
104 डॉ.डी.जयप्रदा/राष्ट्रसंघ के लिए हिंदी की महत्ता
107 डॉ.जे.सरिता/हिंदी कहानियों में चित्रित नारी का वात्सल्य रूप

संस्मरण

112 ज्योति नारायण/ज्ञानपीठ पुरस्कृत केदारनाथ सिंह जी

हिंदी कहानी

114 विवेक द्विवेदी/परेशान मत होना पापा
126 देवेंद्र कुमार शर्मा/'FB फ्रेंडशिप'

आदान-प्रदान

134 अनुवादक : पारनंदि निर्मला/मधुर स्मृति

व्यंग्य

141 सत्यनारायण भटनागर/नशा जो कभी उतरता ही नहीं
144 विवेक रंजन श्रीवास्तव/किटी पार्टी
146 संजीव गुप्त/चित्रकूट के घाट पर भइ संतन की भीर

पुस्तक समीक्षा

148 डॉ.कंचन सेठ/हँस के लेंगे हिंदुस्तान-व्यंग्यात्मक कहानी संग्रह

जन

हिंदी प

सामाजिक
धनी वे ए
सेनानी थे

प्रमुखतया
एवं प्रसार

थी। 'कल
प्रोत्साहित

शनिवार,

पित्ती जी
हैदराबाद
तब वे डॉ
क्षेत्र से वे
तत्कालीन
उनके साथ
तेलंगाणा

मानना था
तभी भारत

की दो शौ
नागरी लि
विकास में
मासिक 'ज

संकल्प / :

Scanned with CamScanner

हिंदी कहानियों में चित्रित नारी का वात्सल्य रूप

डॉ.जे.सरिता

नारी अपने संपूर्ण जीवन में एक समर्पिता की भूमिका अदा करती रहती है। इसी कारण वश पुरुष समाज उसे शरीर से कोमल और मन से दुर्बल की उपाधि देता आया है। इसके फलस्वरूप वह शारीरिक और मानसिक रूप से हार का शिकार होती गई। परंतु उसकी निर्निमेषिता और दयालुता ने उसे देवी के पद पर आसीन कर दिया है। यह धारणा मान्यता बना दी है कि जिस स्थान पर नारी उपस्थित होगी वहाँ देवताओं का वास रहेगा।

मनुस्मृति में कहा गया है कि-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।"

सृष्टि के आरंभ से ही स्त्री पुरुष की रीढ़ की हड्डी बनी हुई है। उसी ने पुरुष को अंकुरण जन्म, पोषण आदि दिया है। "नारी अधिक सजगता, अधिक ममता, त्याग, वात्सल्य, करुणा, कोमलता एवं मधुरता से पुरुष की कठोरता एवं रूक्षता को झेलती रही है। नारी का मानसिक विकास पुरुष के मानसिक विकास से अधिक द्रुत गति से होता है। उसका स्वभाव अधिक कोमल और प्रेम, घृणा आदि भाव अधिक तीव्र तथा स्थायी होते हैं... इन दोनों प्रवृत्तियों में उतना ही अंतर है, जितना विद्युत और झड़ी में। एक से शक्ति उत्पन्न की जा सकती है... परंतु प्यास नहीं बुझाई जा सकती।"

नारी माँ, बहन, पत्नी, भाभी, दादी, नानी, बुआ आदि रूपों में संघर्ष के रास्तों पर चल जीवन जीने का साहस कर रही है। अंतिम दशक के महिला एवं पुरुष कहानीकारों की कहानियों में नारी के कोमल एवं कठोर जैसे अनेक रूपों का चित्रण व्यापक स्तर पर देखने को मिलता है।

स्त्री को दो रूपों में दर्शाया गया है, एक तो उसका कोमल स्वभाव जिसके कारण वह आदर्श मानी गयी हे और दूसरा उसका कठोर रूप जिसके कारण वह स्वार्थी मानी गयी है। इसी संवाद में स्त्री के अनेक रूपों का चित्रण हम अंतिम दशक की कहानियों में देखेंगे।

उसमें एक अमूल्य रूप है माँ का। माँ जननी है। उसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। वह असहनीय वेदनाओं एवं शारीरिक कष्टों को सहकर शिशु को जन्म देती है। अतः वह उस शिशु का भरण-पोषण करती है। अपनी संतान के सुख हेतु वह अनेकानेक कष्टों एवं प्रताड़नाओं को सहर्ष स्वीकारती है। माँ के प्रेम, स्नेह एवं त्याग का धरती पर दूसरा कोई उदाहरण नहीं है। वेदों में तो माँ को देवताओं से भी पूज्यनीय बताया है। अतः इसे 'मातृदेवो भव' कहा गया है। अपनी संतान को संस्कार देने में माँ की विशेष भूमिका होती है। प्रत्येक माँ को अपनी संतान सर्वाधिक प्रिय होती हे। वह अपनी संतान के लिए सारे विश्व से लड़ने को तैयार रहती है।

आधुनिक समाज में नारी माँ के साथ-साथ स्वंत्रतापूर्वक नौकरी, व्यवसाय कर रही है। घर में अपनी संतान की देखरेख के लिए महिलाएँ आया रख लेती हैं। आयाएँ भी उस

Scanned with CamScanner

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार

एक अनुशीलन

प्रधान संपादक
डॉ. अविनाश [illegible]

Scanned with CamScanner

23. कबीर पर बौद्ध और जैन दर्शन का प्रभाव - डॉ. चांदावत विजया 61-62
24. बौद्ध मत के सिद्धांत - सुमन कनौजिया 63-65
25. बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली - डॉ. कमलेश कुमार 66-68
26. बुद्ध के सिद्धांत-बुद्ध और बौद्ध भारत - डॉ. कांबले गौतम 69-71
27. डॉ. बी.आर. आंबेडकर एवं बौद्ध विचारधारा - डॉ. गट्ला रमेशबाबू 72-74
28. कबीर के साहित्य पर बौद्धों के शून्य और क्षणिकवादों का प्रभाव : एक अध्ययन - डॉ. के.वी. कृष्णमोहन 75-77
29. बौद्ध साहित्य के मूलस्तंभ लिपिटक - डॉ. नागलगिद्य मारुति 78-80
30. विश्व में बौद्ध धर्म का विकास एवं सिद्धांत - डॉ. जे. सरिता 81-82
31. बौद्ध धर्म में कला - डॉ. टी. कविता 83-85
32. बुद्ध एवं जैन साहित्य में धार्मिक एकरूपता - डॉ. शेक सादिक पाषा 86-88
33. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एवं बौद्ध विचारधारा - डॉ. शक्तिराज काले 89-91
34. बौद्ध धर्म : उद्भव एवं विकास - डॉ. जी. एच. नीता 92-94
35. डॉ. आंबेडकर और बौद्ध विचारधारा - डॉ. नागवल्ले रमा व्यंकटराव 95-96
36. तथागत बुद्ध का जीवन - पूनम कुमारी 97-99
37. हिंदी के बौद्ध साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. एम. राधा 100-101
38. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के धार्मिक विचार - डॉ. सोनटक्के साईनाथ 102-104
39. बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध विचारधारा - माधनुरे राहुल 105-107
40. बौद्ध धर्म : उद्भव एवं विकास - कल्पना दासरी 108-110
41. महात्मा गौतम बुद्ध - ताल्ला निरंजन 111-113
42. महात्मा बुद्ध - शेख महबूब रमजान 114-115
43. बौद्ध धर्म का विकास - के. माधुरी 116-117
44. चीन में बौद्धिक धर्म - बी. तीरूमला देवी 118-120
45. बौद्ध विहार शांति उपवन, लखनऊ - शेख मस्तान वली 121-122
46. बौद्ध धर्म का उद्भव एवं विकास - सय्यद ताहेर 123-125
47. बौद्ध धर्म के विभिन्न दार्शनिक ग्रंथ - चेन्नकेशव रेड्डी 126-128
48. बौद्ध मत के सिद्धांत : आदिवासी जनजाति मुंडा - गेडाम प्रवीण 129-131
49. हिंदी साहित्य में बौद्ध धर्म के विचार - अनिता जी. 131-134

Scanned with CamScanner

30. विश्व में बौद्ध धर्म का विकास एवं सिद्धांत

डॉ. जे. सरिता

बुद्धम् शरणम् गच्छामि । मैं बुद्ध को शरण जाता हूँ।
धम्मम् शरणम् गच्छामि । मैं धम्म की शरण में जाता हूँ।
संघम् शरणम् गच्छामि । मैं संघ के शरण में जाता हूँ।

बौद्ध धर्म को अपनाना यानी सच्चे धर्म का मार्ग अपनाना है। ऐसे धर्मात्मा एवं महान योधा सिद्धार्थ का जन्म लुंबिनी के कपिलवस्तु वन में हुआ जो कि अब नेपाल में है। उनके पिता का शुद्धोधन और माँ का नाम महामाया था। उनके जन्म के बाद ही एक भविष्यवता ने कहा कि यह बालक एक प्रसिद्ध चक्रवर्ती बनेगा अगर इसके मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ तो उसे सन्यासी बनाने से कोई रोक नहीं सकता। राजा शुद्धोधन ने कई प्रयासों के बावजूद सिद्धार्थ को सांसारिक दु:खों से विचलित नहीं कर पाए और वे सांसारिक बंधनों को सांसारिक बंधनों को छोड़कर महल से निकल पड़े। घूमते-घूमते गया नामक स्थान पर बोधिवृक्ष के नीचे ध्यान मुद्रा में कई दिनों तक भूखे प्यासे दु:ख के निवारण के लिए तपस्या की। तब इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने लोगों को इस वास्तविक ज्ञान से परिचित कराया। उनके प्रवचनों को उनके शिष्यों ने बाद में कई ग्रंथों में लिपिबद्ध किया है।

बुद्ध के बाद बौद्ध धर्म, दर्शन, परंपरा में कई महान दार्शनिकों ने बौद्ध धर्म का अनुसरण किया। बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का सिद्धांत दिया जिससे उन्होंने इस चार शक्तियों को समझने के आसान तरीके बताए। जो आम जीवन से जुड़े हैं।

दु:ख - जीवन का अर्थ ही दु:ख है।

दु:ख कारण - इस दु:ख का कारण ही तृष्णा और चाहत है।

दु:ख निरोध - इस तृष्णा से मुक्ति पाना ही दु:ख निरोध है।

दु:ख निरोध का मार्ग - तृष्णा से मुक्त अष्टांगिक मार्ग के अनुसार पाया जा सकता है।

उन्होंने अहिंसा का सिद्धांत देते हुए सभी तरह की जीव हिंसा को गलत बताया। बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म, दर्शन, परंपरा में कई महान दार्शनिक हुए जैसे आनंद मैत्री, चद्रकीर्ति, पदमसंभव, जागनि, नागार्जुन, कुमारजीवा ने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

यह धर्म तेजी पूरी दुनिया में फैल गया, और इस धर्म के प्रचार से भिक्षुओं की संख्या बढ़ने लगी। बड़े-बड़े राजा महाराज भी उनके शिष्य बनाने लगे बुद्ध ने बहुजन हिताय

Scanned with CamScanner

बहुजन सुखाय लोक कल्याण के लिए अपने धर्म का देश विदेश में प्रचार करने के लिए भिक्षुओं को भेजने में सम्राट अशोक ने भी अहम् भूमिका निभाई। मौर्यकाल तक आते-आते भारत से निकाल कर बौद्ध धर्म आज विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक हो गया है। विश्व में करीब 192 करोड़ लोग बौद्ध धर्म को माननेवाले हैं। विश्व में ईसाई धर्म के बाद बौद्ध धर्म के अनुयायी है। विश्व के सभी महाद्विपों में बौद्ध धर्म के अनुयायी पाए जाते हैं। आज दुनिया में बौद्ध धर्म की आबादी हिंदू, इस्लाम धर्म के बराबर है।

भारत में इस धर्म का उदय हुआ किंतु फैलते-फैलते यह एशिया का प्रमुख धर्म बन गया और अब चीन बौद्ध धर्म की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। उसके साथ-साथ जापान, थाईलैंड, कोरिया, ताइवान, श्रीलंका, नेपाल, इंडोनिशा, मलेशिया, सिंगठापुर, ब्राजील, फ्रांस, रुस, बांग्लादेश तक फैल गया।

आगे चल कर बौद्ध धर्म को दो संप्रदाय बने हीनयान और महायान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थ स्थल है। लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर।

बौद्ध धर्म के धर्मग्रंथ को त्रिपिटक कहा गया है। बुद्ध ने कहा है कि अष्टांगिक मार्ग ही मनुष्य के सभी निवारणों का मार्ग है। अष्टांगिक मार्ग है- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि आदि। अगर मनुष्य इन अष्टांगिक मार्ग को अपना कर जीवन यापन में आगे बढे तो वह हर दु:खों से निवारण पा सकता है और जीवन में सफल रहेगा।

डॉ. जे. सरिता
शासकीय महिला महाविद्यालय, बेगमपेट
हैदराबाद।
मो.नं. 9290613200

Scanned with CamScanner

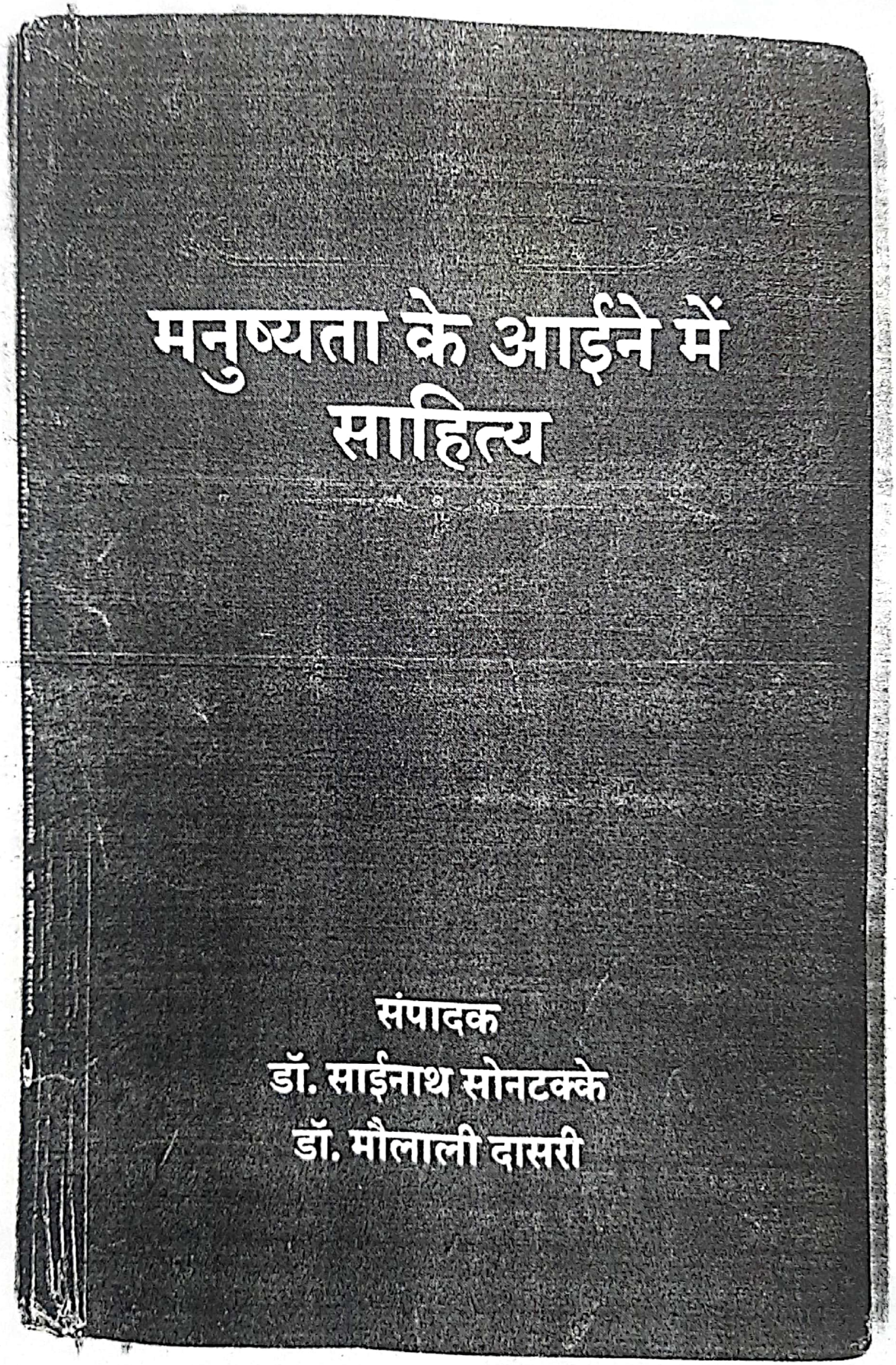

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

1. संतोष पवार कृत 'चोरटा' में आंबेडकरवाद -डॉ. साईनाथ सोनटक्के 1-5
2. दलित साहित्य और आंबेडकरवाद - डॉ. मोलाली दासरी 6-10
3. 'नीला आकाश' : गांधीवाद से आंबेडकरवाद की ओर - प्राचार्य डॉ. एम. सुधाकर 11-14
4. साहित्य-सिनेमा सामंजस्य के सामाजिक सरोकार - डॉ. प्रियंका 15-20
5. समकालीन कविताओं में जीवन यथार्थ - डॉ. के. माधवी 21-25
6. हिंदी दलित कविता: दलित स्त्री का व्यवस्था के प्रति आक्रोश- पूनम कुमारी 26-29
7. 'लौटते हुए' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की व्यथा- डॉ. जे. सरिता 30-33
8. कवयित्री रजनी तिलक : मानवाधिकार कार्यकर्ता - डॉ. छाया वागबिजे 34-37
9. हिंदी कहानियों में चित्रित बाल श्रमिक जीवन की व्यथा - नेक प्रवीन 38-41
10. रमणिका गुप्ता की कहानियों में स्त्री वेदना - डॉ. नागवल्ले रमा व्यंकटराव 42-45
11. मनुष्यता के आईने में 'शिकंजे का दर्द' का विश्लेषण - प्राध्यापक अजय 46-49
12. प्रदीप पंत की कहानियों में भ्रष्टाचार पर व्यंग्य - कदम सीमा तुलसीराम 50-53
13. मनुष्यता के आईने में वृद्ध-विमर्श - नीता जाधव 54-57
14. इक्कीसवीं सदी की स्त्री कथा साहित्य के आईने में - अंजली कुमारी 58-61
15. व्यंग्यकार ज्ञान चतुर्वेदी कृत 'बारामासी' उपन्यास में व्यंग्य - डॉ. प्रीति कुमारी 62-64
16. रामचरितमानस की अद्वितीय लोकप्रियता - डॉ. एम. राधा 65-69
17. तुलसी साहित्य : आचार्य रामचंद्र शुक्ल की दृष्टि में - जे. अनीता 70-72
18. आदिवासी जीवन की संघर्ष गाथा : जो इतिहास में नहीं है - पी. रवि कुमार 73-76
19. दलित नाटक लेखन की प्रेरणा : बुद्ध और आंबेडकर - एच. मोहन 77-79
20. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित स्त्री - अस्मा बेगम 80-84
21. मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में चित्रित मानवतावाद - पूजा वागबिजे 85-89
22. हिंदी दलित कविता : सामाजिक यथार्थ - नागाराजु नकिरेकंटि 90-93
23. शैलेश माटियानी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री की व्यथा - सुरेंद्र सादी 94-99
24. हिंदी कहानियों में चित्रित दलित स्त्री - जी. सुजाता 91-103
25. भारत में पिछड़ें वर्ग की सामाजिक स्थिति - मदन राठौड़ 104-107

Scanned with CamScanner

7. 'लौटते-हुए' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की व्यथा

डॉ. जे. सरिता (एसोसिएट प्रोफेसर)

विश्व पटल पर औद्योगीकरण और उच्च तकनीकी विकास की रफ्तार की दौड़ में आदिवासी समाज कहीं दिखाई नहीं देता है। समूचे विश्व में भौतिक प्रगति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, परंतु आदिवासी समाज आज भी आदिम जीवन जीने को अभिशप्त है। भारत एक विशाल देश है जिसमें विभिन्न धर्म, जातियाँ, सभ्यता एवं संस्कृति के लोग निवास करते हैं, जिनमें अनेक प्रकार की विविधताएँ मिलती हैं। इन्हें तीन विभागों में विभाजित किया जा सकता है- ग्रामीण समाज, नगरीय समाज और आदिवासी समाज। यह स्पष्ट है कि नगरीय एवं ग्रामीण समाज से आदिवासी समाज पृथक् है। इस समाज का अधिकांश हिस्सा आज भी दूर-दराज के जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों में निवास कर रहा है। आदिवासी युगों-युगों से दुर्गम क्षेत्र में रहते आये हैं। यह कहना कोई गलत नहीं होगा कि उनका नगरीय संस्कृति एवं सभ्यता से संपर्क न के बराबर रहा है। 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने आधुनिक संसाधनों को विकास किया। इससे कुछ आदिवासी नगरीय लोगों के संपर्क में आने लगे।

वाल्टर भेंगरा 'तरूण' कृत 'लौटते हुए' उपन्यास का प्रकाशन 2005 में हुआ है। उपन्यासकार झारखंड के निवासी है। इस उपन्यास के मूल में आदिवासी विस्थापन की समस्या की त्रासदी बड़ी ही मार्मिकता से चित्रित हुई है। विस्थापन के कारण आदिवासियों को अपनी ही जमीन से पलायन करना पड़ रहा है। सरकारी तंत्र पूँजीपतियों के साथ मिलकर आदिवासी क्षेत्र की खनिज संपदा प्राप्त करने के लिए कभी विकास के नाम पर तो कभी बंदूक की नोक पर आदिवासियों को विस्थापित कर रही है। आदिवासी युवा शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। झारखंड के छोटा नागपुर के एक गाँव की युवती सलोमी अपने परिवार को चलाने के लिए दिल्ली जैसे महानगर में आकर 'आया' का काम करती है। भारत में आया के रूप में काम करनेवाली महिलाओं का कोई संगठन नहीं है। उन महिलाओं पर होनेवाले शोषण की खबरें समाचार पत्रों में पढ़ने में आती हैं। सलोमी भी इसी प्रकार का काम करती है परंतु मालिक मौके का फायदा उठाकर उसका जबरन दैहिक शोषण करता है।

आदिवासी बहुत भोले होते हैं, वे महानगरों की संस्कृति से परिचित नहीं हैं। वे जिस माहौल में पले-बढ़े होते हैं, वहाँ शोषण की संस्कृति नहीं है। एक तरफ विस्थापन की मार से आदिवासी युवा-युवती शहरों में आकर काम कर रहे हैं दूसरी तरफ उन्हें शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। इस उपन्यास की नायिका सलोमी बार-बार दैहिक शोषण का शिकार होकर गाँव लौटती है। अपने गाँव वापस लौटने के बाद वह आदिवासी महिलाओं को इस

Scanned with CamScanner

जाती है- "सलोनी स्वयं यह न जान सकी थी कि वह कहाँ जा रही है। वह नींद में चल रही थी। अंधकार में सब कुछ डूबता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। वह भी उसी नीम अंधेरे में विलीन होने के लिए जा रही थी। भीड़ भरे शहर में।...उस शहर में जहाँ लोगों की भीड़ थी...मकानों की भीड़ थी...अट्टालिकाओं की भीड़ थी... कार, बसों और दूसरे यातायात के साधनों की भीड़ थी...एक उठे हुए तूफान की तरह वह शहर भी सबको निगल जाना चाह रहा था। सलोमी भी उन लहरों की चपेट में आ ही गयी थी...दिल्ली के स्वप्न प्रदेश में !"3 आदिवासी शहरी, नगरी दुनिया के चकाचौंध जीवन को नहीं जानते। वे प्राकृतिक जीवन जीने वाले लोग हैं, हरित पत्तों से अच्छादित जंगलों वनों जैसे प्रकृति में निवास करनेवाले लोगों का शहर में दम घुटता है। सलोमी जब शहर आकर घर का काम करने लगी तब वह शहरी लोगों की हैवानियत का शिकार हो जाती है।

संदर्भ :

1. वाल्टर भेंगरा 'तरूण', 'लौटते हुए', पृ.सं. 115-116
2. प्रफुल्ल रंजन झा, 'भारतीय मानवशास्त्र', पृ.सं. 253
3. वाल्टर भेंगरा 'तरूण', 'लौटते हुए', पृ.सं. 31

डॉ. जे सरिता (एसोसिएट प्रोफेसर)
शासकीय महिला महाविद्यालय,
बेगमपेट, हैदराबाद।
मो.नं. 9290613200

Scanned with CamScanner

शिक्षा, साहित्य व हिंदी सिनेमा में किन्नर विमर्श

संपादक

अमित कुमार दुबे

Scanned with CamScanner

तरतीब

किन्नर उदारीकरण : अद्यतन भारतीय समाज डॉ. किरण खन्ना	13
भारतीय सिनेमा में किन्नर विमर्श डॉ. राखी उपाध्याय	19
हिन्दी सिनेमा और किन्नर विमर्श में अंतरसंबंध डॉ. रुपाली दिलीप चौधरी	23
हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श डॉ. रमेश कुमार/ डॉ. संतोष कुमारी/ डॉ. रविकांत	28
हिन्दी सिनेमा में शबनम मौसी डॉ. श्वेत प्रकाश	34
शिक्षा, साहित्य और हिन्दी सिनेमा... पुरुषोत्तम शाकद्वीपी	40
किन्नर आत्मकथाओं में... डॉ. अनु पांडेय	43
समाज का पिछड़ा वर्ग किन्नर समुदाय डॉ. लवलीन कौर	51
हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श डॉ. किरण बेन ओ. डोडिया	57
समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श डॉ. जूली कुमारी	65
किन्नर और शिक्षा डॉ. संजय कुमार	76
'किन्नर कथा' में किन्नर विमर्श डॉ. सविता प्रमोद	82
Educational and Social Issues faced by Eunuchs Hardeep Singh	90
शिक्षा, साहित्य और हिन्दी सिनेमा में किन्नर विमर्श रजनी सोनी	97
हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श संगीता कुमारी पासी	104
हिन्दी सिनेमा में चित्रित किन्नर जीवन डॉ. जे. सरिता	110
21 वीं सदी के उपन्यासों में किन्नर विमर्श श्रीआमुलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	114
किन्नर और समाज की मुख्यधारा डॉ. मनिता सेंगर	118
नालासोपारा में किन्नर मनोविज्ञान आराधना साव	122

Scanned with CamScanner

हिन्दी सिनेमा में चित्रित किन्नर जीवन

डॉ. जे. सरिता

समाज में किन्नरों की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं तिरस्कृत है। समाज में हमेशा किन्नरों को नकारात्मक दृष्टि से ही देखा गया है। किन्नरों को देखते ही लोग नजरें चुराते हैं। लोग इनसे संपर्क करना भी पसंद नहीं करते हैं। न्यायालय ने किन्नरों को 14 अप्रैल, 2014 को तीसरे लिंग के रूप में यानी 'Third Gender' मान्यता दी है। बावजूद समाज इन्हें हिजड़ा, किन्नर, नपुसंक, छक्का, खुसरा, ट्रासंजेंडर आदि नाम लेते हैं। स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी यह समाज को शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य आदि मूलभूत सुविधाओं से वंचित है।

ताली बजाना, लोगों की खुशियों में शामिल होना, नाच-गाकर बधाई देना आदि उनके जीवन का हिस्सा है। समाज में किन्नरों के प्रति एक छवि बन गयी है। इनकी सबसे बड़ी समस्या पहचान की है। कृष्णमोहन झा की एक कविता से किन्नर जीवन की व्यथा और स्थिति को समझ सकते हैं–

"उनकी गालियों और तालियों
से भी उड़ते हैं
खून के छींटे,
और यह जो गाते-बजाते
उधम मचाते,
हर चौक-चौराहों पर
वे उठा देते हैं अपने
कपड़े ऊपर
दरअसल उनकी अभद्रता नहीं
उस ईश्वर से प्रतिशोध
लेने का उनका एक तरीका है

Scanned with CamScanner

वर्ष : 2 अंक : 5 अक्तूबर, 2018

भाषा सहोदरी-हिंदी ©

स्वत्वाधारी, मुद्रक एवं प्रकाशक

भाषा सहोदरी-हिंदी ©

कार्यालय :

कार्यालय : सी–36 बी, अप्पर ग्राउण्ड, जनता गार्डन
(दुर्गा मंदिर के सामने) नजदीक–दिल्ली पुलिस सोसायटी,
मयूर विहार–1, नई दिल्ली–110091

सम्पर्क सूत्र : +91-9811972311, 9599303676, 8851552593

ई–मेल : sahodaribhasha@gmail.com,

वेबसाइट : www.bhashasahodarihindi.org

मूल्य : ₹200

वार्षिक सदस्यता शुल्क

सदस्य	:	100 रुपये
कार्यकारिणी	:	2000 रुपये
संरक्षक सदस्य	:	5000 रुपये

शुल्क जमा करने का विवरण :

संस्था का नाम : भाषा सहोदरी हिंदी
बैंक का नाम : कैनरा बैंक
बैंक खाता संख्या : 2801101009560
IFSC Code : CNRB002801
शाखा : मयूर विहार, फेज–1, नई दिल्ली

नोट : पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

मुख्य संयोजक एवं प्रबन्ध संपादक

जय कान्त मिश्रा

महासचिव हिन्दी प्रचारक

प्रो० लता चौहान

श्री पंकज कुमार

श्रीमती चन्द्र कान्ता सिवाल

श्रीमती रंजना झा

डॉ० शालिनी शुक्ला

संपादक

डॉ० उषा रानी राव (बंगलुरु)

उप संपादक

डॉ० के० श्याम सुन्दर (हैदराबाद)

संपूर्ण भारत में अगर हिन्दी को स्थापित करना है, तो न्याय... कार्यपालिका, विधायिका में संपूर्ण स्थान हिन्दी को मिलना च...

किसी संस्था को खड़ा करने और आगे बढ़ाने में कई सदं हुए ... और अनुभवी लोगों की आवश्यकता होती है। अतः न्यास की ... से हम सभी वरिष्ठ साहित्यकारों, विद्वानों और लेखकों से ... करते हैं कि वो अपने अमूल्य सुझावों से हमें लाभान्वित करते ... ताकि न्यास अपने निहित उद्देश्यों के साथ आगे बढ़ सके।

Scanned with CamScanner

डॉ० अफसर उन्निसाँ बेगम

असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हिन्दी विभाग गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर विमन बेगमपेट, हैदराबाद

मोबाइल : 8179204078, 8374208336

ई–मेल : bafsarunnisa@gmail.com

विश्व पटल पर हिंदी के उन्नत कदम

"हिन्दी में है जीवन मूल्य
संस्कार संस्कृति हिन्दी में
भाषा की परिनिष्ठा
अमृत की धार हिन्दी में।"

विश्व पटल पर हिंदी अपना अस्तित्व स्थापित करने में सक्षम बनी है। कभी एक समय था जब उसे अपने को साबित करने के लिए स्वयं के देश में संघर्ष करना पड़ रहा था। आज भी कहीं–कहीं अपने ही देश में हिंदी संघर्षरत है पर विदेश में हिंदी भाषा को सहर्ष स्वीकारा गया। 1952 में हिंदी भाषा विश्व में पाँचवें स्थान पर थी। 1980 तक आते–आते वह चीनी भाषा और अंग्रेजी के बाद तृतीय स्थान को प्राप्त की। यह जानकर हमें आश्चर्य होगा कि मातृभाषा हिंदी का प्रयोग करने वालों की संख्या अंग्रेजी भाषियों से अधिक है। 1991 की जनगणना से इस बात का पता चला। प्रोफेसर महावीर सरन जैन जो भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी संस्थान के 1998 में निर्देशक थे, उन्होंने 1998 में विश्व की भाषाओं पर यूनेस्को को भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के आधार पर विश्व स्तर पर मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में हिंदी को चीनी भाषा के बाद विश्व में दूसरे स्थान पर घोषित किया।

भारत विविध भाषी राष्ट्र है। इसमें लगभग 22 भाषाएँ बोली जाती है, परंतु सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा का श्रेय हिंदी को प्राप्त है। 1949 में भारत का संविधान देवनागरी हिंदी में ही लिखा गया था। 14 सितंबर 1950 संविधान के लागू होने के बाद विश्व स्तर पर 14 सितंबर हिंदी दिवस मनाये जाने की शुरुआत हुई। इसे मनाने कारण संविधान की भाषा हिंदी का सम्मान करना था। एक बात हिंदी के हित में यह हुई कि इस दिवस की हिंदी के अस्तित्व को मजबूत बनाने में कारगर साबित

हिंदी के प्रति जागरूकता

अंग्रेजियत को शिक्षितों की भाषा व फैशन बनता देखकर भारतीय हिंदी प्रेमी जागरुक हो गए। उन्होंने भाषा के प्रयोग, प्रचार–प्रसार में अपना पूरा योगदान सामर्थ्य लगाया। केवल मात्र भारत में ही नहीं विदेशों में हुए भारतीय हिंदी भाषियों एवं हिंदी प्रेमियों ने हिंदी और साहित्य के लिए दिलो–जान से कार्य किया। परिश्रम के परिणाम स्वरुप 1975 ईस्वी में नागपुर में त्रिदिवसीय विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन हुआ देश और विदेश के विद्वानों ने सहर्ष भागीदारी दी। भाषा के प्रयोग व कामकाज का महत्व चर्चा का विषय निःसंकोच हिंदी भाषा को अपनाने की बात कही गई अंग्रेजी आती भी है तो हिंदी भाषा को तुच्छ न समझकर का प्रयोग गर्व से करने पर बल दिया गया। लोगों आह्वान किया गया कि वे अपनी मातृभाषा अपनाएं।

Scanned with CamScanner